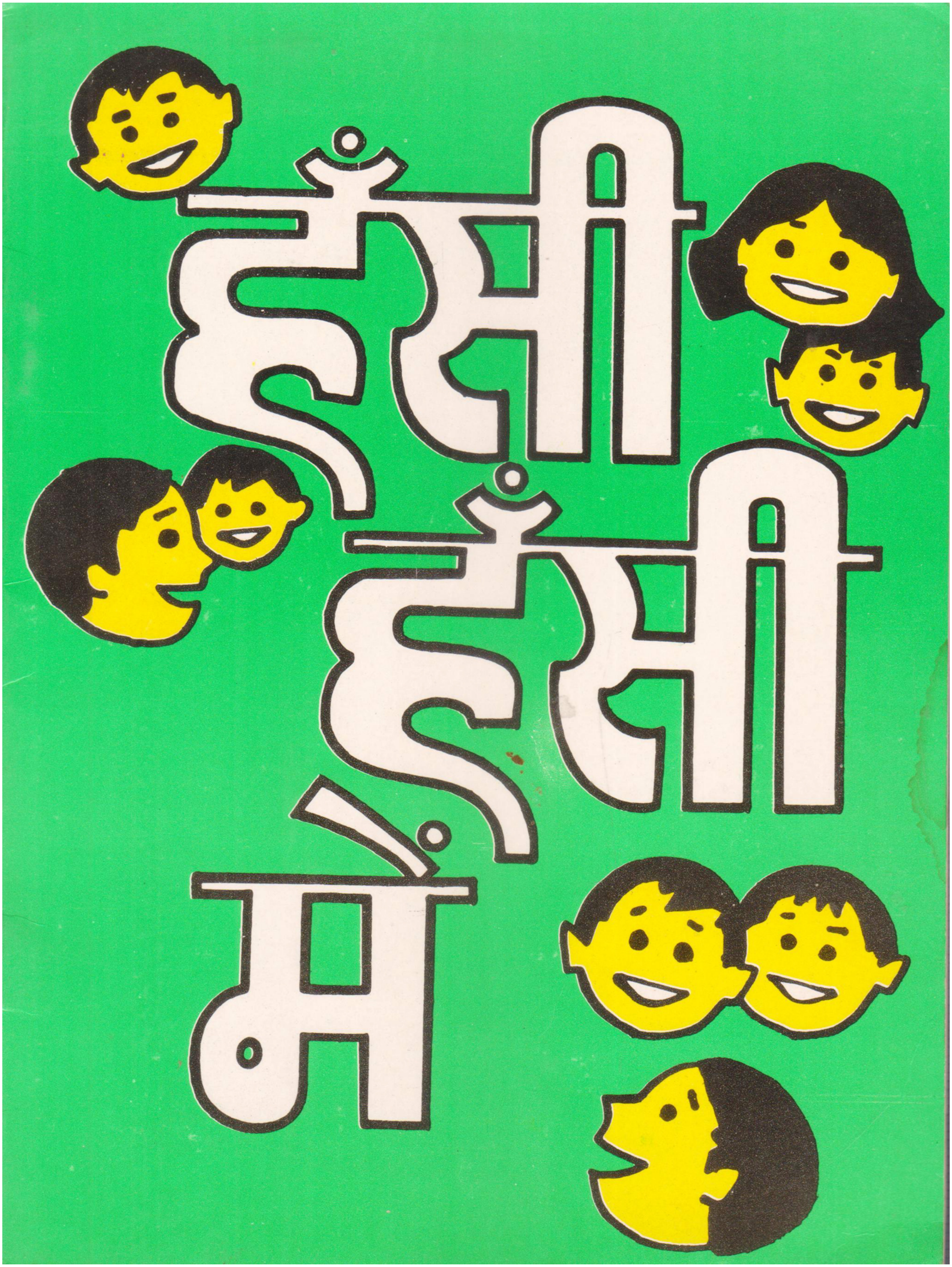

हँसी
हँसी
में

हँसी-हँसी में

कुलदीप तलवार

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण	: फाल्गुन	1901	(मार्च 1980)
द्वितीय संस्करण	: भाद्र	1903	(अगस्त 1981)
तृतीय संस्करण	: ज्येष्ठ	1908	(जून 1986)
चतुर्थ संस्करण	: ज्येष्ठ	1911	(जून 1989)
पंचम संस्करण	: पौष	1915	(जनवरी 1994)

© प्रकाशन विभाग

ISBN 81-230-0039-1

मूल्य : 18 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली - 110001 द्वारा प्रकाशित

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली - 110001
- कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर, बम्बई - 400038
- 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता - 700069
- एल० एल० ए० आडीटोरियम, 736 अन्नासलै, मद्रास - 600002
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना - 800004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, तिरुवनन्तपुरम - 695001
- 10 बी, स्टेशन रोड, लखनऊ - 226019
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद - 500004

आकाशदीप प्रिन्टर्स, 20 अन्सारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-110002

विषय-सूची

सेक्रेटरी की प्रतीक्षा

पब्लिक स्कूल की पांचवीं कक्षा के बच्चों को निबंध लिखने के लिए दिया गया, विषय था – "मान लो, तुम मैनेजर हो।" बच्चों ने लिखना शुरू कर दिया। कुछ बच्चों ने निश्चित समय से पहले ही निबंध लिख लिया। कुछ बच्चे अभी लिख ही रहे थे कि निरीक्षक ने देखा-अजय चुपचाप बैठा है। वह कुछ भी नहीं लिख रहा है। निरीक्षक उसके पास गए और पूछा – "अजय तुम क्यों नहीं लिख रहे हो? समय बीतता जा रहा है। जल्दी से लिखना शुरू करो।"



अजय ने उत्तर दिया – "आपने मुझे मैनेजर तो बना ही दिया है, इसलिए अब मैं अपने सेक्रेटरी की प्रतीक्षा कर रहा हूं। वह आए तो मैं लिखना शुरू करूं।"

पुरानी कार

सेंट मेरी स्कूल के बच्चों को एक निबंध लिखने के लिए दिया गया, शीर्षक था – 'पुरानी कार'। उसे पचास शब्दों में लिखना था। दीप्ति ने लिखा – "एक बार मेरे चाचा जी पुरानी कार खरीद कर लाए। हम सबको उसमें बिठाकर वह बाहर घुमाने ले गए। अभी कार पचास किलोमीटर ही चली थी कि वह खराब हो गई। आगे के लिए हम पर जो गुजरी, वह लिखने योग्य नहीं है। बात खत्म, कुल शब्द संख्या हुई-पचास।"

चाय-पार्टी

राजेश बहुत शरारती लड़का था। शुरू-शुरू में उसे घर वालों ने घर पर ही पढ़ाना शुरू किया। जब वह थोड़ा बड़ा हुआ, तो विद्यालय में दाखिल करा दिया गया। स्कूल मैं वह और भी शरारती हो गया। हरदम साथियों के साथ मार-पीट करता रहता। उसकी शरारतों से तंग आकर उसके माता-पिता को उसे उस विद्यालय से हटा दूसरे में दाखिल कराना पड़ा। दूसरे विद्यालय में आकर भी राजेश की वही हालत रही। कुछ बच्चे राजेश से घृणा करने लगे और उससे दूर-दूर रहने लगे। एक दिन राजेश ने उनसे पूछा – "आप लोग मुझसे दूर-दूर क्यों रहते हैं? मेरे पहले स्कूल के बच्चे तो मुझे बहुत चाहते थे। जब मैं उस स्कूल से आने लगा तो वहां के बच्चों ने मुझे बहुत ही अच्छी टी-पार्टी दी थी।" यह सुनते ही एक लड़के मनोज ने तुरंत कहा – "जब तुम यह स्कूल छोड़ोगे तो हम तुम्हें केवल टी-पार्टी ही नहीं देंगे बल्कि एक टी-सेट भी खरीद कर दे देंगे ताकि वह आगे भी तुम्हारे काम आए।" यह सुनकर राजेश बहुत लज्जित हुआ और उसने अपने साथियों से लड़ना-झगड़ना बंद कर दिया।

कवि सम्मेलन

गणतंत्र दिवस पर एक विद्यालय में बच्चों का कवि सम्मेलन किया गया। उसमें जिले के लगभग सभी स्कूलों के चालीस बाल कवियों ने भाग लिया। उनमें सभी तरह के कवि थे। एक बहुत मोटा बाल कवि था। उसे देखते ही हर किसी का चेहरा खिल उठता।

जब कई बाल कवि अपनी कविताएं पढ़ चुके, तो मोटे बाल कवि की बारी आई। वह माइक के पास आकर बैठ गया। खांसकर गला साफ किया। जेब में कोई चीज टटोली। फिर खाली हाथ बाहर निकाल कर बोला – "मैं कविता नहीं पढ़ सकूंगा, क्षमा चाहता हूं। कविताओं की कापी तो मैं घर ही भूल आया हूं।" यह सुनते ही एक लड़का तुरंत बोला – "आपको कविताओं की कापी की क्या जरूरत है आप तो स्वयं ही एक रजिस्टर हैं।" चारों ओर हंसी के फव्वारे छूट पड़े।

गुल्लक

रजनी की पन्द्रहवीं वर्षगांठ थी। उसके पिता ने बीस रुपये दिए और कहा जो चीज चाहे वह खरीद ले। रजनी ने चीज खरीदने की बजाय बैंक में खाता खोला।

जब वह बैंक में खाता खोलने का फार्म भर रही थी तो उसमें एक प्रश्न था। इसमें उसके पहले बैंक का नाम पूछा गया था। रजनी ने बड़े-बड़े शब्दों में जवाब लिखा — "गुल्लक।"

मेरी राय

एक साहब लखनऊ से दिल्ली लौट रहे थे। कानपुर स्टेशन पर गाड़ी रुकी। देखा, एक भारी-भरकम आदमी जल्दी-जल्दी उनके डिब्बे की तरफ आ रहा था। वह काली शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा पहने था। एक हाथ में छाता और दूसरे में लम्बी नली वाला हुक्का था। देखकर मुसाफिरों को हंसी आ गई।

सभी मुंह छिपाकर हंसने लगे।

वह डिब्बे में आया और दो आदमियों जितनी जगह घेरकर बैठ गया। कुछ देर हुक्का गुड़गुड़ाता रहा, फिर पसरकर खर्राटे भरने लगा। उसी के पास कुछ छात्र भी बैठे थे। उन्हें शरारत सूझी। एक लड़के ने हुक्का उठा लिया। दूसरे से बोला — "क्यों भाई! अगर इस हुक्के को तोड़ दें तो? क्या राय है तुम्हारी? जब यह तरबूज नींद से जागेगा तो बहुत मजा आएगा।।" उसका साथी हंसकर बोला — "हां, हां, बात तो मजेदार है, पर जरा दूसरे यात्रियों की राय भी ले ली जाए।"

तभी हुक्के का मालिक उठा बैठा। हंसकर बोला — "अजी, मैंने कहा, विचार तो अच्छा है। पर इस बारे में मेरी राय भी आप लोग ले लें तो अच्छा रहेगा।"

डिब्बे में ठहाका गूंज उठा। शरारती लड़के ऐसे चुप हुए कि फिर पूरे सफर में खामोश रहे।

कितनी आंखें

एक बार एक काने और दो आंखों वाले में बहस छिड़ गई। काना बोला — "मुझे ज्यादा दिखाई देता है।" दो आंखों वाला बोला — "तेरी तो एक ही आंख हैं। तुझे मुझसे आधा दिखाई देता है।"

काने व्यक्ति ने कहा — "ठीक है, अभी इस बात का फैसला हो जाता है। बता मेरी कितनी आंखें हैं।" दो आंखों वाला मुस्कराया — "मुझे तो एक ही दिखाई दे रही है।"

इस पर काना हँसते हुए बोला — "बस, तू हार गया, क्योंकि मुझे तेरे चेहरे पर दो आंखें दिखाई दे रही हैं।"

टेढ़ी गर्दन

किसी गांव में एक व्यापारी रहता था। घर में हर तरह का सुख-चैन था। ऊंची हवेली, अनेक नौकर-चाकर और बहुत लंबा व्यापार था उसका। पर जितना वह धनवान था, उतना ही कंजूस भी। बातें बहुत बढ़ा-चढ़ा कर करता था, किंतु जब कुछ देने की बारी आती तो जेब से कानी कौड़ी भी न निकलती।

उसके घर में एक नौकर था। व्यापारी उसके काम से खुश था। एक दिन नौकर से बोला — "ऐसे ही मन लगाकर काम करते रहो। बढ़िया इनाम दूंगा।"



कई महीने बीत गए, लेकिन इनाम देने की नौबत नहीं आई। वह मालिक को उसके वायदे की याद कैसे दिलाता? डरता था, कहीं वह नाराज न हो जाए। एक दिन व्यापारी पशुओं के बाड़े में आया। नौकर वहीं काम कर रहा था। व्यापारी ने देखा, एक ऊंट गर्दन टेढ़ी किए

बैठा है। उसे लगा कहीं ऊंट बीमार न हो। वह नौकर से बोला – "यह ऊंट गर्दन टेढ़ी करके क्यों बैठा है"

नौकर को अपनी बात कहने का मौका मिल गया। तपाक से बोला – "सरकार, यह भी किसी को इनाम देने का वायदा करके भूल गया है।" यह सुनकर व्यापारी को अपना वायदा याद आ गया। उसने उसी समय नौकर को इनाम दे दिया।

चोर ही अच्छे

राजू के घर चोरी हो गई। घर में और कोई भी नहीं था। राजू ने ही पुलिस स्टेशन फोन किया। उस समय वर्षा हो रही थी। पुलिस इन्सपेक्टर ने राजू को फोन पर ही जवाब दिया – "अभी हम नहीं आ सकते, बहुत जोरों से बारिश हो रही है।" यह सुनते ही राजू को बहुत गुस्सा आया और उसने जवाब दिया – "इन्सपेक्टर साहब, आप से तो चोर ही अच्छे हैं, जो वर्षा में भी अपना कर्तव्य निभाते हैं।"

यहीं के लिए

राजू स्कूल जाने लगा तो देखा, कमीज पर प्रेस नहीं हुई है। उसकी मम्मी प्रेस करने लगी, पर जल्दी-जल्दी में प्रेस हाथ से छूटकर गिर गई। दोबारा लगाई तो गर्म नहीं हुई। शायद कुछ खराबी आ गई थी।

राजू की मम्मी पड़ोस में गई। उनसे प्रेस मांगी। पड़ोसिन बोली – "बहन, अभी खरीदी है, घर ले जाने के लिए नहीं दे सकती, चाहो तो यहीं इस्तेमाल कर लो।" राजू की मम्मी को बहुत बुरा लगा। पर उस समय कुछ नहीं बोली।

कुछ दिन बीते। एक सुबह पड़ोसिन राजू की मम्मी के पास गई और बोली – "बहन जरा झाड़ू तो देना। अभी लौटा दूंगी।"

राजू की मम्मी तो चिढ़ी बैठी थी। झट बोली – "बहन, बुरा न मानना। चाहो तो यहीं इस्तेमाल कर लो।"

पड़ोसिन उल्टे पांव लौट गई।

कुरुप आदमी

एक आदमी बेहद कुरूप था। शक्ल से बिल्कुल भूत लगता था। मगर था शेखीबाज। एक बार उसने अपने मित्र से कहा – "तुम्हें सुनकर आश्चर्य होगा, मेरी पत्नी बड़ी निडर है। भूत-प्रेत से भी उसे डर नहीं लगता।"

मित्र ने मुस्कराते हुए कहा – "तुम ठीक कहते हो भाई! तुम्हें देख-देखकर उनका सारा डर निकल चुका होगा।"

स्वर्ग की सैर

एक बार आठवीं कक्षा के बच्चों को मास्टर जी नरक के दुःख तथा स्वर्ग के सुख बता रहे थे। जब वे पूरी तरह दोनों के बारे में बता चुके तो जोर से बच्चों से पूछा – "जो बच्चे स्वर्ग की सैर करना चाहते हैं, वे अपना हाथ खड़ा करें। यह सुनते ही सभी बच्चों ने अपने हाथ खड़े कर दिए, लेकिन एक लड़की चुपचाप बैठी रही। उसको चुपचाप बैठा देखकर मास्टर जी ने पूछा – "निधि, क्या तुम स्वर्ग की सैर नहीं करना चाहतीं?' लड़की ने तुरंत ही जवाब दिया, "सर, मैं स्वर्ग की सैर तो करना चाहती हूं, लेकिन इतने सारे बच्चों के साथ नहीं।" यह सुनते ही सारी कक्षा के बच्चे और मास्टर जी खिलखिला कर हँस पड़े।

इलाज

एक बिजली ठीक करने वाला संदीप के घर पहुंचा। उस समय संदीप घर के दरवाजे पर खड़ा था। मिस्त्री ने संदीप से कहा – "मैं बिजली की दुकान से आया हूं। पता चला है इस घर में कोई चीज खराब हो गई है, काम ठीक नहीं कर रही।" संदीप ने यह सुनते ही तुरंत उत्तर दिया – "जी, मेरे दादाजी का दिमाग खराब हो गया है। अभी वे दादीजी से लड़े हैं। आप ऊपर चले जाइए, वे ऊपर वाले कमरे में हैं।"

सबक

एक बार माडल स्कूल की आठवीं कक्षा की अध्यापिका ने लड़कियों से पूछा – "परमात्मा की पैदा की हुई चीज से हमें कुछ-न-कुछ सीखने को मिलता है। है न? तो यह बताओ, हम मच्छर से क्या सीखते हैं?" जब सब लड़कियां अपना उत्तर दे चुकीं तो एक लड़की रेशमा मलिक ने उत्तर दिया – "मैडम, हम मच्छर से यह सीखते हैं कि अपने आपको किसी से कटवा लेना कितना सरल है।"

भोंपू

फैजाबाद के एक स्कूल में बाल कवि सम्मेलन था। दूर-दूर से बाल कवि आए हुए थे। लखनऊ से भी इसमें एक बाल-कवि आया हुआ था, जो शक्ल-सूरत से भोंपू-सा दिखाई देता था। जैसे ही उस कवि ने अपनी कविता की ये पंक्तियां पढ़ीं–

"मेरी मम्मी है बीमार,
कैसे होली खेलूं रे?"

यह सुनते ही हाल में बैठा हुआ एक लड़का चिल्लाया – "भाई साहब, अगर मम्मी बीमार थीं तो कवि सम्मेलन में क्या करने चले आए?"

कछुआ

एक आदमी ने एक कछुआ यह कह कर बेचा कि कछुए की आयु बहुत होती है, तीन सौ वर्ष जिन्दा रहता है। संयोग से वह अगले दिन ही मर गया। खरीदने वाला बहुत ही गुस्से में दुकानदार के पास पहुंचा और बोला — "तुम तो कहते थे कि कछुआ तीन सौ साल जिन्दा रहता है, वह तो एक दिन में मर गया।"

दुकानदार का उत्तर था — "मुझे कछुए के मरने का बहुत अफसोस है, मगर इसका क्या इलाज है कि उसकी आयु के तीन सौ वर्ष आज ही पूरे हुए हैं।"

रास्ता

एक सज्जन तंग गली से गुजर रहे थे। दूसरी तरफ से एक मोटा आदमी आ रहा था। उसने सज्जन से कहा — "रुको, पहले मेरे लिए रास्ता छोड़ दो।"

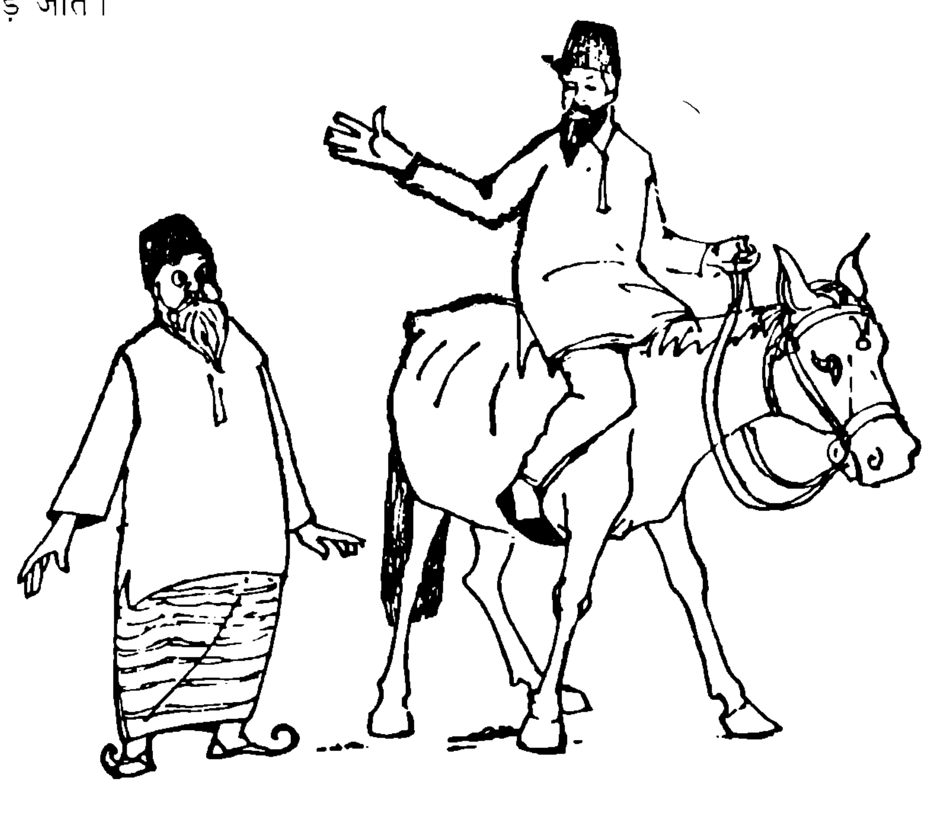
सज्जन नम्रता से बोले — "भाई, मैं दुबला-पतला हूं, रास्ता तो तुम्हें ही छोड़ना होगा।"

यह सुनना था कि मोटे ने क्रोध से कहा — "मैं मूर्खों के लिए रास्ता नहीं छोड़ता।"

"ठीक है, मगर मैं छोड़ देता हूं।" — कहते हुए वह सज्जन एक तरफ हट गए।

जुम्मे की नमाज

मेले में घोड़ों का व्यापारी घोड़े बेचने गया। व्यापारी के साथ उसका मसखरा दोस्त भी था। दोस्त आने वालों को ऐसे-ऐसे मजेदार चुटकुले सुनाता कि हंसते-हंसते लोगों के पेट में बल पड़ जाते।



व्यापारी ने कई घोड़े बेचे। उसे काफी मुनाफा हुआ। शाम को दोनों चलने लगे तो व्यापारी अपने दोस्त से बोला – "ले यार, तू भी क्या याद करेगा, तूने आज ग्राहकों का खूब मन बहलाया, एक घोड़ा तुझे देता हूं। यह कह कर उसने एक घोड़ा दोस्त के हवाले कर दिया। घोड़ा बहुत मरियल था। गधे से भी गया गुजरा। दोस्त घोड़े पर बैठकर बोला – "अच्छा, भाई! चलता हूं।"

"कहाँ जा रहे हो?" – व्यापारी ने पूछा। "जुम्मे (शुक्रवार) की नमाज पढ़ने जा रहा हूं।" – दोस्त बोला।

"लेकिन आज तो जुम्मेरात (वृहस्पतिवार) ही है।" – व्यापारी ने अचरज से कहा। "हां, बात तो तुम्हारी ठीक है, पर यह घोड़ा तो कल तक ही मस्जिद पहुंच सकेगा।" – मसखरे दोस्त ने मजाकिया अंदाज में कहा।

व्यापारी यह सुनकर शर्मिन्दा हो गया और उसने तुरंत दोस्त को दूसरा घोड़ा दे दिया।

पेंच

सैनिक स्कूल में आठवीं कक्षा के बच्चों से सवाल पूछा गया – "वह कौन-सा पुर्जा है जिसके खुल जाने से कार किसी दूसरी चीज से टकरा जाती है।"

सब बच्चे अपना-अपना जवाब दे चुके तो एक लड़का शरद बोला – "सर, पहिए का पेंच।"

मोटे भैया

हमारे पास के बंगले में मोटे भैया रहते हैं। मोटे भैया का असली नाम है – राजकुमार। दसवीं कक्षा में पढ़ते हैं। खूब मोटा होने से सब उन्हें मोटे भैया कहकर पुकारते हैं। पिछली गर्मियों में वह अपने माता-पिता के साथ कश्मीर गए। वहां जाकर खूब घुड़सवारी की। उन्होंने अपनी इस यात्रा के बारे में अपने एक मित्र को पत्र में लिखा – "मैं घोड़े की पीठ पर बैठकर दस किलोमीटर ऊंची चोटी पर चढ़ गया। मजा आ गया। मैं बिल्कुल नहीं थका।" मित्र महोदय को बात समझते देर नहीं लगी। उनके पत्र के जवाब में तार भेजकर पूछा – "कृपया घोड़े का हाल लिखें।"

चिड़ियाघर

किसी स्कूल की सातवीं कक्षा के लड़कों को एक निबंध लिखने को दिया गया। शीर्षक था – 'चिड़ियाघर'। यह निबंध पचास शब्दों में लिखना था। सभी लड़कों ने लगभग एक-सा ही उत्तर दिया – "चिड़ियाघर उसे कहते हैं जहां पशु-पक्षी रहते हैं।" लेकिन राकेश ने अपना उत्तर इन शब्दों से समाप्त किया – "चिड़ियाघर उसे कहते हैं जहां पर पशु-पक्षी मनुष्य की आदतों का अध्ययन करते हैं।"

एक रंग

राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन के एक अंग्रेज मित्र उनसे मिलने आए। मजाक करते हुए बोले — "आपके देश के निवासी भी कई रंगों के हैं। कोई काला — कोई गोरा। हमारे देश के निवासियों को देखो, सभी का रंग एक है।"

डा० राधाकृष्णन ने मुस्कराते हुए कहा — "आप की बात बिल्कुल ठीक है। घोड़े कई रंगों के होते हैं, मगर गधे एक ही रंग के पाए जाते हैं।"

बुद्धिमान

एक साहब अपने को बहुत बुद्धिमान समझते थे। एक बार उन्हें रमेश मिल गया तो बोले — "आजकल कौन-सी कक्षा में पढ़ रहे हो?" "एम० ए० में" — रमेश ने कहा।

यह सुनना था कि साहब तपाक से बोले — "भैया, एक सवाल पूछूं। एक दिन रास्ते में एक गधा मिल गया। गधे वाला उसे पीट रहा था। मैंने उससे कहा अरे भलेमानुस, बेजुबान जानवर को क्यों पीट रहा है? मेरे कहने पर गधे वाले ने गधे को पीटना बंद कर दिया। अब तुम बताओ, इस बात से मेरा कौन-सा गुण सामने आया?"

रमेश ने उत्तर दिया — "बन्धु-प्रेम।"

जादुई बटन

अध्यापिका जी ने रेणु से पूछा — "तुम क्या आविष्कार करना चाहोगी?" रेणु ने जवाब दिया — "मैडम, मैं एक ऐसी मशीन बनाना चाहूंगी, जो मेरा 'होम वर्क' बटन दबाते ही पूरा कर दे।"

और फिर जब यही प्रश्न एक और लड़की से पूछा तो उसने जवाब दिया — "मैडम, मैं कोई एक ऐसी चीज बनाऊंगी, जो उस मशीन का बटन दबा दे।"

इन दोनों के जवाबों को सुनकर सारी कक्षा एवं अध्यापिका जोर से हंस पड़ीं।

पेट का दर्द

एक सज्जन एक हकीम के पास गए। उनके पेट में दर्द था। हकीम ने पूछा कि रात में तुमने क्या खाया था? जवाब में वे बोले — "आटे की रोटी, जो पकने में कुछ कच्ची रह गई थी।"

हकीम ने सुरमा आंखों में लगाने को दे दिया। यह सज्जन हैरान होकर पूछने लगे — "हकीम साहब, पेट के दर्द का आंख से क्या संबंध?"

हकीम साहब उसकी पीठ थपथपाते हुए बोले — "भाई, आंखों में कमजोरी न होती तो कच्ची-पक्की देखकर खाते।"

भाई-भाई

वह अपने इलाके का सबसे बड़ा कंजूस था। एक फकीर उसके पास गया और कहा – "हम और तुम दोनों भाई-भाई हैं, मगर तुम अमीर हो, क्योंकि मेरे हिस्से पर भी तुमने ही कब्जा कर रखा है, कृपा करके मेरा आधा हिस्सा मुझे दे दो।"



जवाब में कंजूस ने फकीर को एक पैसा दे दिया। इस पर फकीर बोला – "क्या यह बराबर का हिस्सा है?"

कंजूस का उत्तर था – "जनाब, चुपचाप यहां से चले जाइए, वरना तुम्हारे और भाइयों को भी खबर हो गई तो एक पैसा भी तुम्हारे हिस्से में नहीं आएगा।"

गंजा

दीपक कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे पंकज मिला। दीपक को मजाक सूझा। वह बोला — "पंकज, तू अपने को क्या समझता है। अगर तू मुझे कुछ कहेगा तो मैं तेरे बाल पकड़ कर खींच लूंगा।"



पंकज हैरान रह गया। उसे गुस्सा आ गया। बोला — "तू मेरे बाल खींचेगा, तो क्या मेरे हाथ नहीं हैं? मैं भी तेरे बाल खींच लूंगा।"

दीपक ने हंसकर टोपी उतार दी। बोला — "ले खींच। क्या खींचेगा, मैं तो गंजा हूं।"

चतुर नौकर

मालकिन को एक चतुर नौकर की तलाश थी। बहुत से नौकर आए, मगर सब बेकार। [illegible] मालकिन ने पूछा — "मेहमानों की खातिर करनी [illegible]

[illegible] — नौकर बोला — "एक तो ऐसी कि मेहमान एक बार [illegible] न आए और दूसरी ऐसी कि आकर फिर कभी वापस न जाए।"

गंजा

दीपक कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे पंकज मिला। दीपक को मजाक सूझा। वह बोला – "पंकज, तू अपने को क्या समझता है। अगर तू मुझे कुछ कहेगा तो मैं तेरे बाल पकड़ कर खींच लूंगा।"



पंकज हैरान रह गया। उसे गुस्सा आ गया। बोला – "तू मेरे बाल खींचेगा, तो क्या मेरे हाथ नहीं हैं? मैं भी तेरे बाल खींच लूंगा।"

दीपक ने हंसकर टोपी उतार दी। बोला – "ले खींच। क्या खींचेगा, मैं तो गंजा हूं।"

चतुर नौकर

मालकिन को एक चतुर नौकर की तलाश थी। बहुत से नौकर आए, मगर सब बेकार। एक दिन एक चतुर नौकर टकरा गया। मालकिन ने पूछा – "मेहमानों की खातिर करनी आती है?"

"जी, दोनों तरह आती है।" – नौकर बोला – "एक तो ऐसी कि मेहमान एक बार आकर फिर कभी न आए और दूसरी ऐसी कि आकर फिर कभी वापस न जाए।"

राष्ट्रीय झंडा

एक दिन निरीक्षण करती हुई प्रधान अध्यापिका ने छठी कक्षा की लड़कियों से बहुत से प्रश्न पूछे। सभी ने अपने-अपने ढंग से ठीक-ठीक उत्तर दिया। इनमें एक आरती नाम की लड़की भी थी। प्रधान अध्यापिका ने आरती से भी प्रश्न किया – "आरती, अगर तुम लड़ाई के मैदान में अपना राष्ट्रीय झंडा लहराता देखो तो तुम क्या समझोगी?" यह सुनते ही आरती ने कहा – "मैडम, मैं समझूंगी हवा चल रही है।" इस सटीक उत्तर को सुनकर सभी जोर-जोर से हंसने लगीं।

प्रवेश निषेध

सैनिक स्कूल के बच्चों को एक चित्र बनाने के लिए दिया गया। शीर्षक था–'शहर की एक गली' और कहा गया कि जैसे ही वे इसको बना लें, अपने घर जा सकते हैं। विजय ने यह चित्र सबसे पहले बना लिया। उसे देखकर टीचर ने कहा – "विजय, यह चित्र तो



ठीक नहीं बना है, यह तो उस गली का दृश्य बना दिया है जो खाली है और दोनों तरफ मकान खड़े हैं। कार-स्कूटर इत्यादि कोई भी गली में आ-जा नहीं रहे।" यह सुनते ही विजय ने रंग से चित्र में बनी गली में लिख दिया – "प्रवेश निषेध"।

नहले पर दहला

एक बार मेरठ के एक सज्जन लखनऊ में किसी नवाब के साथ चले जा रहे थे। रास्ते में कई गधे चरते दिखाई दिए। यह देखते ही मेरठ वाले सज्जन नवाब साहब से कहने लगे –"नवाब साहब, मुझे ऐसा नजर आता है कि लखनऊ में गधों की तादाद कुछ ज्यादा है?" – नवाब साहब भी बड़े हाजिर जवाब थे, तुरंत बोले – "जी हां, हम तो बेबस हैं, सब गधे बाहर से चले आते हैं।"

छेड़छाड़

हमारे गांव में एक धनी आदमी रहता था। वह काफी रोबदार था। उसका नाम सेठ रामधन था। गांव के लोग जरूरत पड़ने पर उससे रुपये की मदद लेते थे। एक दिन वह अपने घर के बरामदे में बैठा सिर मुंडवा रहा था। इतने में उसका एक घनिष्ठ मित्र आ गया। वह मित्र बहुत हंसमुख था, खूब हंसता-हंसाता था। पूरा मसखरा था। अपने मित्र को देखते ही सेठजी ने उसे छेड़ते हुए कहा — "कौन गधा इस समय पहरा दे रहा है।" मसखरा मित्र कहां चुप रहने वाला था, तुरंत बोला — "हुजूर, पहले सिर तो मुंडवा लीजिए, फिर गधा भी आ जाएगा।"

सही रास्ता

एक राजा था। वह सदा अपनी प्रजा के लिए अच्छा सोचता था। प्रजा भी उससे बहुत खुश थी और उसे बहुत चाहती थी। हुआ यूं कि राजा और रानी के घूमने के लिए एक सुंदर बाग बनवाया गया। बाग बहुत ही शानदार था। उसमें कई प्रकार के फूल लगवाए गए। उस बाग में जाने के लिए एक सड़क भी बनवाई गई। जब बाग और सड़क बनकर तैयार हो गए तो राजा और रानी उसे देखने के लिए गए। सड़क के नुक्कड़ पर एक तख्ती लटकी थी। उस पर लिखा था — "यह आम रास्ता नहीं है।" उसे देखते ही राजा बहुत नाराज हुआ और बोला — "राजा वह रास्ता कभी नहीं अपनाते जिस पर चलने के लिए वह दूसरों को रोकते हों।"

ताजमहल

मेरा भानजा राजू मेरे साथ लखनऊ जा रहा था। गाड़ी में बहुत भीड़ थी। एक सीट खाली पड़ी थी। उस पर रूमाल रखा था। रूमाल हटाकर मैं और राजू उसी सीट पर बैठ गए।

गाड़ी चलते ही सीट का मालिक आया और बड़े रोब से कहने लगा — "इस सीट पर मेरा रूमाल रखा था, यह सीट मेरी है। जल्दी से इसे खाली कर दीजिए।"

इससे पहले कि मैं कुछ कहता, राजू बोल पड़ा — "अंकल, अगर आप ताजमहल पर अपना रूमाल रख दोगे तो क्या वह भी आपका हो जाएगा।"

गधा और बैल

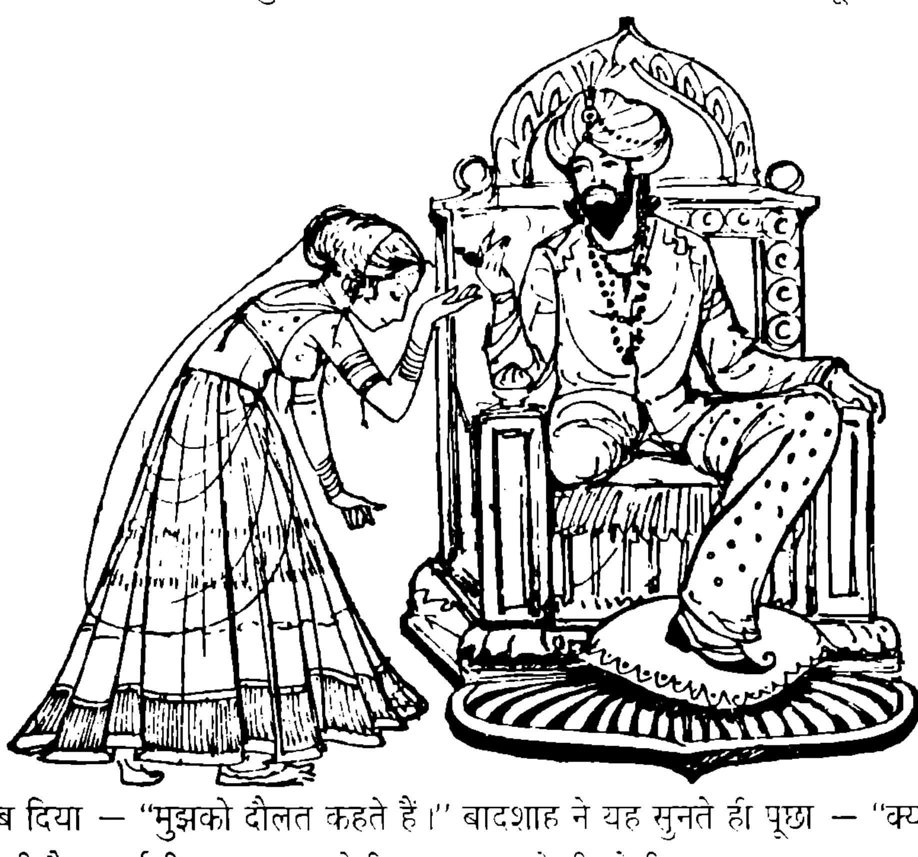
एक गांव में एक तेली के पड़ोस में एक कुम्हार रहता था। कुम्हार का गधा समय-समय पर चिल्लाया करता था, जिससे रात को कई बार तेली की नींद खुल जाती थी। एक बार तेली ने तंग आकर परमात्मा से प्रार्थना की — "हे परमात्मा, यह गधा मर जाए।" संयोग से वह प्रार्थना उल्टी पड़ गई। कुम्हार के गधे की जगह तेली का बैल मर गया। सुबह जब तेली उठा और उसने अपने बैल को मरा देखा तो बहुत रोया। यह परमात्मा को कोसता रहा। आकाश की तरफ देखकर रोते-रोते कहने लगा — "हे परमात्मा, तुझे परमात्मा बने इतने साल हो गए, आश्चर्य है कि तुझे अभी तक गधे और बैल की पहचान नहीं हुई।"

जैसे को तैसा

एक दिन राजेश की मम्मी राधा की मम्मी के घर गईं। राधा की मम्मी उनसे किसी बात पर नाराज थीं, इसलिए वह उनसे मिलना नहीं चाहती थीं। उन्होंने नौकर से कहलवाया कि वह घर पर नहीं हैं। राजेश की मम्मी ने इससे थोड़ी देर पहले राधा की मम्मी को अंदर घर में जाते हुए भी देख लिया था, वह चुपचाप लौट आईं। कुछ दिनों के बाद राधा की मम्मी को कुछ काम पड़ा। वह दौड़ती-दौड़ती राजेश की मम्मी के पास गई। राजेश की मम्मी ने स्वयं दरवाजे के पीछे आकर कहा – "राजेश की मम्मी घर पर नहीं हैं।" यह सुनते ही राधा की मम्मी ने कहा – "बहन, मजाक मत करो। तुम स्वयं ही कह रही हो कि तुम घर पर नहीं हो।" यह सुनकर राजेश की मम्मी ने दरवाजा खोला और शिकायत करते हुए कहा – "मैंने तो उस दिन तुम्हारे नौकर की बात का विश्वास कर लिया था, आश्चर्य है कि आज तुम मेरी बात का यकीन नहीं करतीं।"

दौलत

बादशाह अमीर तैमूर बहुत धनी था। वह एक टांग से लंगड़ा भी था। एक बार उसने एक नर्तकी को अपने दरबार में बुलाया। संयोग से वह अंधी थी। उससे नाम पूछा तो नर्तकी



ने जवाब दिया – "मुझको दौलत कहते हैं।" बादशाह ने यह सुनते ही पूछा – "क्या दौलत अंधी होती है?" नर्तकी क्या जवाब देती, सवाल सुनते ही बोली – "बादशाह सलामत, माफ कीजिएगा, अगर दौलत अंधी न होती तो लंगड़े के घर क्यों आती?"

आदमी और बन्दर

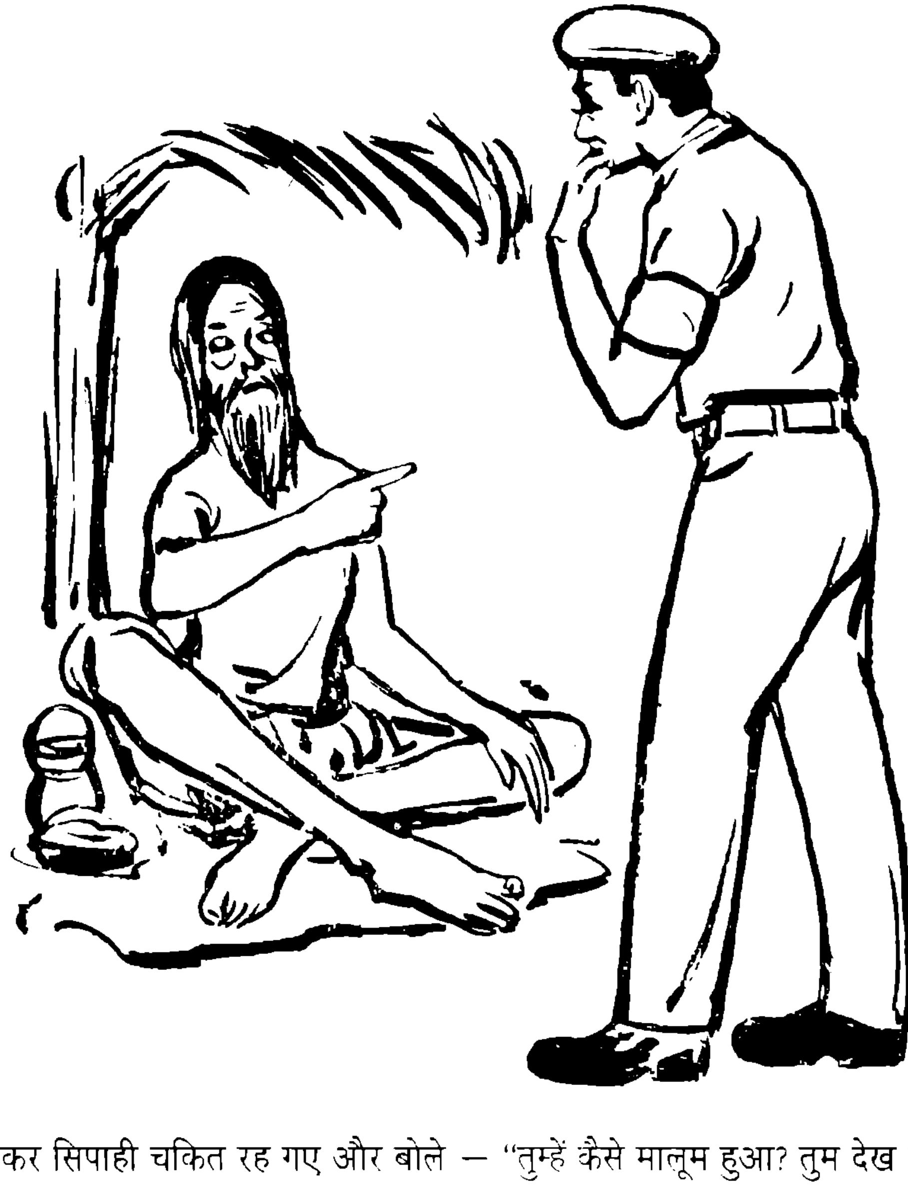
एक बार एक सेठ जी नदी में नहाने गए। कपड़े उतार कर नदी के किनारे रख दिए। नदी के पास एक बड़ा-सा पेड़ था। उस पेड़ पर बहुत से बंदर बैठे थे। देखते-ही-देखते एक मोटे बंदर ने सेठ जी के कपड़े उठाकर पहन लिए। कपड़े पहन कर बंदर बहुत खुश हुआ। बड़ी शान से अपने दूसरे बंदर साथियों से बोला – "हां भाई आदमी तो लगते हो, लेकिन यह देखो कि तुम इन कपड़ों को पहनकर पेड़ पर भी कूद सकते हो।" यह सुनते ही मोटे बंदर ने कोशिश करनी शुरू की। एक टहनी से दूसरी टहनी पर जाना चाहा, मगर ....। भई



वाह! कपड़े का एक सिरा एक टहनी में अटक गया और दूसरा दूसरी टहनी के साथ। मोटे बंदर हैं कि न इधर जा सकते हैं, न उधर। यह देखते ही दूसरे बंदर हंसे। उसका मजाक उड़ाया। उसकी तरफ इशारा करके कहने लगे – "वह देखो, आदमी साहब की क्या हालत हुई है।" कुछ शरारती बंदरों ने तो उसकी दुम को पकड़कर खूब खींचा। बड़ा मजा आया। मोटे बंदर ने तुरंत ही अपने कपड़े चीर-फाड़ कर नीचे फेंक दिए और फिर से बंदर बन गया। अब उसे आदमी बनने की कोई चाह न रही। सुना है कि उस दिन से बंदरों ने कभी आदमी बनना नहीं चाहा। वे कहते हैं कि हम बंदर ही भले हैं।

अंधा फकीर

मेरे शहर में एक सड़क है जिसका नाम मेरठ वाली सड़क है। उस सड़क पर एक फकीर बैठा करता था। वह आने-जाने वालों से भीख मांग कर अपनी गुजर किया करता था। सड़क के साथ ही उसकी झोंपड़ी थी। बेचारा अंधा था, लेकिन उसके कान बहुत तेज थे। एक दिन क्या हुआ कि पुलिस के सिपाही एक चोर का पीछा करते-करते उस सड़क पर पहुंचे। अंधे फकीर ने हाथ का इशारा करके उनसे कहा — "चोर इसी सड़क पर भागता हुआ गया है।"



यह सुनकर सिपाही चकित रह गए और बोले — "तुम्हें कैसे मालूम हुआ? तुम देख तो सकते नहीं।" अंधे फकीर ने जवाब दिया — "मगर मैं सुन तो सकता हूं।" अंधे फकीर का यह जवाब सुनकर सिपाही ने फिर सवाल किया — "मगर तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि भागने वाला चोर ही था?" फकीर का उत्तर था — "उसके भागने का तरीका ही कुछ ऐसा था, वह बहुत जल्दी में था। भागते-भागते भी वह पीछे देखता जाता था। वह जानना चाहता था कि आप

लोग उसका पीछा तो नहीं कर रहे।" यह सब सुनकर सिपाही फकीर के बताए हुए रास्ते पर चल पड़े। आगे आकर उन्होंने चोर को पकड़ लिया। वापसी पर वह अंधे फकीर के पास पहुंचे और उसका बहुत-बहुत धन्यवाद किया। चलती बार बोले, — "बड़े मियां! आपके कान बहुत से लोगों की आंखों से अच्छे हैं।"

कंजूस

एक कंजूस सड़क पर चल रहा था। दिल में कहने लगा — अगर मुझे इस समय एक रुपया पड़ा मिल जाए तो मजा आ जाए। मैं उसका चौथाई भाग परमात्मा के नाम पर किसी फकीर को दे दूंगा। संयोग से सड़क पर एक रुपया पड़ा मिल गया। वह बहुत खुश हुआ। वह एक दुकान पर सौदा लेने पहुंचा। दुकानदार ने रुपया देखकर कहा — "यह तो खोटा है, इसके पचहत्तर पैसे मिलेंगे।"

कंजूस सिर पकड़ कर रह गया। आकाश की तरफ देखकर ठंडी सांस भरते हुए कहने लगा — "वाह परमात्मा वाह! तुमने अपने हिस्से के पच्चीस पैसे पहले ही काट लिए।"

पहचान

होली के दिन बच्चे घर के चबूतरे पर खड़े होकर नीचे गली में आने जाने वालों पर रंग फेंक रहे थे। राजेश शरारत के मूड में था। वह रंग की जगह पानी से भरे गुब्बारे फेंक रहा था। इधर गली से गड़बड़लाल गुजर रहे थे। गड़बड़लाल वास्तव में गड़बड़लाल थे। सारा दिन बच्चों और बूढ़ों से मजाक करते थे। जैसे ही राजेश ने गड़बड़लाल को आते देखा, एक पानी से भरा गुब्बारा गड़बड़लाल के मुंह पर फेंक दिया। गड़बड़लाल चौंक पड़े और शिकायत लेकर राजेश के पिता के पास पहुंचे। कहने लगे — "तुम्हारे लड़के ने मुझ पर बड़े जोर से कोई चीज फेंकी है" यह सुनकर राजेश के पिता ने हमदर्दी दिखाते हुए पूछा — "आपको इससे कोई चोट तो नहीं आई।" इस पर गड़बड़लाल ने ना में जवाब दिया। यह सुनते ही राजेश के पिता बोले, "गड़बड़लाल जी, फिर मैं यकीन से कह सकता हूं कि यह काम मेरे लड़के राजेश का नहीं है। अगर राजेश कोई चीज फेंकता तो जरूर चोट आती।"

कसौटी

स्कूल में एक नाटक खेला गया। नाम था 'शाही मेहमान'। नाटक अच्छा नहीं था। सभी देखने वाले बोर हो रहे थे। दूसरे दिन बच्चों से मास्टर जी ने इस नाटक के बारे में पूछा — "विशेष तौर पर यह ड्रामा कैसा था? इसका अंत तो अच्छा था न?" मास्टर जी नाराज न हो जाएं, इसलिए सब बच्चों ने कह दिया कि यह नाटक अच्छा था। जब हेमंत से यही प्रश्न पूछा गया तो वह तुरंत ही बोला — "सर, इसकी समाप्ति पर सब लोग बहुत खुश थे।"

सुझाव

बिटिया को सुबह तैयार करके स्कूल भेजना एक मुसीबत है। वह बहुत-सी चीजों की मांग करती है। कभी किसी चीज की, कभी किसी चीज की। जैसे-तैसे उसकी मांगें पूरी की जाती हैं। तब वह स्कूल जाती है। एक दिन एका को उसकी मां ने सभी कुछ दिया लेकिन वह स्कूल जाने का नाम नहीं लेती थी। मां ने पूरी कोशिश करने के बाद कहा – "देखो बेटी तुम बहुत ही खुशनसीब हो। तुम्हें इन दिनों माडर्न मैथ्स पढ़ने को मिलता है। तुम्हें इस पर गर्व होना चाहिए। जब मैं स्कूल में पढ़ती थी, तब यह नहीं था। मुझे इसलिए इसको पढ़ने का अवसर नहीं मिला है।" यह सुनते ही एका पहले तो चुप रही, फिर मां से बोली – "आप चिंता क्यों करती है। आप अब भी मेरा होम वर्क करके इसको सीख सकती हैं।"

हवाई जहाज

विवेक अपनी कक्षा में सबसे ज्यादा हंसमुख लड़का था। ऐसी-ऐसी मजाक की बातें करता था कि मजा आ जाता था। कभी-कभी तो वह मास्टरजी से भी मजाक कर लेता था जिससे सारी कक्षा में हंसी की फुहार फूट पड़ती थी। होम वर्क बहुत कम करता था। मास्टर जी के पूछने पर बहाने बनाता था। एक बार ऐसा हुआ कि सब बच्चों को ड्राइंग मास्टर ने घर से हवाई जहाज बनाकर लाने को कहा। सभी बच्चे हवाई जहाज बनाकर ले आए। विवेक बनाकर नहीं लाया। मास्टर जी ने जब विवेक से इस बारे में पूछा तो वह बगलें झांकने लगा। फिर तुरंत बोला – "सर, बनाया तो था, उसे साथ ला रहा था, लेकिन रास्ते में कोई उसे उड़ाकर ले गया।" विवेक की यह बात सुनते ही कक्षा में ठहाका गूंज उठा।

शिक्षा

एक बार महात्मा गांधी रेल में सफर कर रहे थे। साथ में मनुबेन गांधी भी थीं। वह जिस डिब्बे में बैठे थे उसमें टपक-टपक कर पानी इकट्ठा हो गया था। गार्ड को जैसे ही इसका पता चला, वह उनके पास आया और बापू से हाथ जोड़कर कहने लगा, "मुझे शर्मिन्दगी है कि जिस डिब्बे में आप सफर कर रहे हैं उसमें पानी जमा हो गया है। आप मेरे साथ दूसरे डिब्बे में चलें और इसे छोड़ दें। बापूने यह सुनकर जवाब दिया – "अगर आप इस डिब्बे में दूसरों को बिठाने वाले हैं तो फिर मैं ही क्यों न इसमें बैठा रहूं। दूसरों को भी तो तकलीफ होगी।" यह सुनकर गार्ड के पास कोई उत्तर नहीं रहा। लेकिन उसने यह जरूर पूछा "मेरे लिए कोई सेवा हो तो जरूर बताइए।" बापू ने तुरंत ही उत्तर दिया – "आपके लिए तो बहुत काम है। आप यात्रियों को परेशान न किया करें। उनसे रिश्वत न लें। अगर आपने ऐसा किया तो यह मेरी बहुत बड़ी सेवा होगी।"

दलील-1

चार मित्र थे। वे बेकार थे। किसी की सलाह पर उन्होंने कपास का एक कारखाना खोला। कारखाने की सुरक्षा के लिए एक बड़ा कुत्ता पाला। कुत्ता बहुत सुंदर था। भूरा रंग, मोटी-मोटी आंखें, बड़े-बड़े खड़े लम्बे कान, हिलती हुई सुंदर दुम। उस कुत्ते से चारों मित्रों को बहुत प्यार हो गया। और हर एक ने उसकी एक-एक टांग पर अपना-अपना नाम लिख दिया। एक बार कुत्ते की एक टांग पर जख्म हो गया। जिस मित्र का नाम उस टांग पर लिखा था, उसने मरहम पट्टी कर दी। संयोग से पट्टी में आग लग गई। कुत्ता घबराकर कारखाने में इधर-उधर भागने लगा। ऐसें में अचानक रूई के ढेर में आग लग गई। बहुत-सा माल जलकर भस्म हो गया। देखते-ही-देखते काफी नुकसान हुआ। इस नुकसान को देखते हुए शेष तीनों मित्रों ने चौथे मित्र से कहा — "इस हानि के लिए जिम्मेदार तुम हो, क्योंकि तुम्हारी वाली टांग पर पट्टी बंधी थी। न तुम पट्टी बांधते और न ही उसमें आग लगती।" यह बात सुनकर वह घबराया नहीं। थोड़ी देर चुप रहा, फिर सोचकर सहज भाव में उत्तर दिया — "जिस टांग पर मैंने पट्टी बांधी थी वह तो बेकार थी। उस टांग से वह चल नहीं सकता था। कुत्ता अपनी उन तीन टांगों से कारखाने में गया था जो ठीक थीं और जिन पर तुम्हारा नाम लिखा हुआ था।" यह दलील सुनते ही मित्रगण बहुत हंसे और नुकसान को भूल गए।

जीवनी

सातवीं कक्षा के बच्चों को बेंजामिन फ्रेंकलिन पर एक निबंध लिखने को दिया गया। सभी बच्चों ने निबंध लिख दिया। सभी ने लिखा कि बेंजामिन ने बिजली का आविष्कार किया। एक लड़के ने जिसका नाम अनुज था, आधी पेंसिल मुंह में चबाकर काफी सोच-विचार के बाद बेंजामिन की जीवनी इस तरह संक्षेप में लिखी — "वह बोस्टन में पैदा हुआ। वहां से वह फिलाडेल्फिया गया। वहां एक महिला से मिला। वह उसे देखकर हंसने लगी। उसने उससे शादी कर ली और फिर बिजली का आविष्कार किया।"

जेब-खर्च

स्कूल की पांचवीं कक्षा के छात्रों को 'जेब खर्च' पर एक छोटा-सा निबंध लिखने को दिया गया। शर्त यह थी कि यह पांच पंक्तियों से ज्यादा न हो और इसे दस मिनट में लिखना था। सबसे पहले राकेश ने इसे पूरा किया, फिर गुरमीत ने और इसके बाद रोहित ने। लेकिन इनके निबंध मास्टर जी को पसंद नहीं आए। रजत का निबंध पढ़कर मास्टर जी बहुत हंसे। रजत को शाबाशी दी। खुश भी हुए। रजत ने लिखा था — "यही एक चीज है जो मेरी जेब में बहुत कम टिकती है।"

नवाब नकटे मिर्जा

हमारे मोहल्ले के नुक्कड़ वाले मकान में नवाब नकटे मिर्जा रहते हैं। बेचारे मिर्जा की नाक भी है। फिर भी लोग उन्हें नकटे मिर्जा के नाम से पुकारते हैं। नाक होते हुए भी नकटा कहलाना एक अजीब बात है। छोटा हो या बड़ा, सभी उन्हें देखते ही कहते – "वो देखो, नवाब नकटे मिर्जा चले आ रहे हैं।"

मिर्जा अपने भारी बदन के लिए भी मशहूर हैं। चलते हैं तो ऐसा नजर आता है कि हाथी चला आ रहा हो। मिर्जा दाढ़ी नहीं रखते। लेकिन लंबी-लंबी मूंछें जरूर रखते हैं। मूंछें इतनी लंबी है कि कानों तक पहुंच गई हैं। मिर्जा रोजाना दाढ़ी नाई से साफ करवाते हैं।

मिर्जा का मिजाज माशा-अल्लाह बचपन से ही तेज है क्योंकि आखिर किस बाप के बेटे हैं। मिर्जा के अब्बा बहुत रोबदार आदमी थे। मक्खी सारे बदन पर किसी भी जगह पर बैठ जाए मगर नाक पर कभी नहीं बैठने देते थे। मिर्जा बचपन से ही जिद्दी हैं। सुना है एक बार बचपन में अपने अब्बा और अम्मी के साथ तांगे पर सवार हुए। तांगा चला तो मचल गए। कहने लगे घोड़े की पीठ कर बैठूंगा। अब्बा अगली सीट पर बैठे थे। उन्होंने उसे दोनों हाथों से पकड़ कर घोड़े की दुम की तरफ मुंह करके बैठा दिया। घोड़ा घबराया और भड़ककर पीछे हटने लगा। अब हुक्म हुआ कि तांगा उल्टा चलेगा। अब तांगा है कि पीछे हट रहा है। सड़क पर सभी लोग देख रहे हैं। एक तमाशा नजर आ रहा है। गर्ज यह कि बचपन से ही अम्मी और अब्बा के प्यार ने उनके मिजाज को बिगाड़ दिया है। छोटी-छोटी बात पर उन्हें गुस्सा आ जाता है। यह गुस्सा थोड़ी देर ही रहता है। मोहल्ले के कुछ शरारती लड़के तो उन्हें गुस्सा दिलवाने की तरकीबें भी सोचते रहते हैं, ताकि मिर्जा के गुस्से से लुत्फ उठा सकें। हर रोज ये लड़के कोई-न-कोई बात ऐसी करते हैं कि मिर्जा को गुस्सा आ जाता है। जब तक मिर्जा पर गुस्से के दो-चार दौरे पड़वा नहीं लेते, उनको खाना हजम नहीं होता। एक दिन लड़कों ने जाकर मिर्जा को बताया कि शामू नाई सुबह उनकी दाढ़ी बनाने से पहले सामने के मास्टर साहब की दाढ़ी बना आता है। बात मामूली थी। बस आ गया गुस्सा। बकने लगे नाई को गाली। मास्टर साहब को भी नहीं बख्शा। शामू पर बरस पड़े। खुदा की पनाह। सारा मोहल्ला इकट्ठा हो गया। गुस्से में कहने लगे – "धोखेबाज, नमक हराम वो सामने वाला मास्टर दाढ़ी-मूंछ दोनों मुंड़वाकर वही दाम देता है, जो मैं तुझे केवल दाढ़ी बनवाने के देता हूं। फिर बता किसका हक पहले है?" दूसरी तरफ बेचारे शामू की बुरी हालत थी। वह हर बात पर "हुजूर, हुजूर" कह रहा था और चाहता था कि मिर्जा की गलतफहमी दूर हो। थोड़ी देर के बाद जब यह झगड़ा ठंडा हुआ मिर्जा दाढ़ी बनवाने बैठे। एक तरफ शामू का हाथ कांप रहा था तो दूसरी तरफ मिर्जा का मुंह चलाना बंद नहीं हो रहा था। फिर वही हुआ जिसका

डर था, उस्तरे की तेज धार मिर्जा के सीधे गाल पर लग गई। बस बम फट गया, भूचाल आ गया। शामू नाई यह देखते ही भाग खड़ा हुआ। मिर्जा गुस्से में गरज पड़े। शामू वहां से चला भी गया फिर भी मिर्जा गुस्से के फायर करते रहे। मास्टर साहब को भी बुरा भला कहते रहे। एक सज्जन से कहते सुने गए — "इस मास्टर ने शामू नाई को रिश्वत देकर मेरी नाक कटवानी चाही लेकिन जिसको अल्लाह रखे उसको कौन चखे। शुक्र है कि बाल-बाल बच गया। लेकिन अब अगर मास्टर की नाक दांत से न काटी तो मैं भी तलवारजंग का पोता नहीं।" अब नाक कटने की बात उड़ी तो रामू ने कालू से कहा — "मिर्जा की नाक पर उस्तरे का घाव लग गया है। बाल-बाल बच गए। थोड़ा और चला होता तो नाक ही कट जाती।" फिर कालू ने बशीर से कहा — "मिर्जा की नाक पर उस्तरा लग गया। नाक बाल-बाल बच गई। वरना आज उसका सफाया था।" यह सुनते ही बशीर ने रफीक के कानों में चुपके से कहा — "देख लिया गुस्से का नतीजा, चल गया मिर्जा की नाक पर उस्तरा।" यह बात धीरे-धीरे सारे शहर में फैल गई। इस तरह जितने मुंह उतनी बातें। सभी लोग यह बात कह रहे थे कि मिर्जा की नाक कट गई। नाक कटी कैसे इस बात पर लोगों की अलग-अलग राय थी। कुछ लोग कह रहे थे कि शामू नाई ने काटी। कुछ लोग कह रहे थे कि सामने वाले मास्टर साहब ने काटी। कुछ लोगों का ख्याल था कि नाक न शामू नाई ने काटी और न मास्टर साहब ने। इस काम में तो मिर्जा के साले का हाथ था। एक सज्जन ने तो यहां तक कहा — "अजी मुझसे पूछिए, आप क्या जानें, इसमें कितना गहरा राज़ है। मिर्जा की नाक काटने की स्कीम तो कई सालों से चली आ रही है। मिर्जा और उनके भतीजों में जायदाद के बारे में कई सालों से मुकदमेबाजी थी। आश्चर्य तो यह है कि नाक अब तक बची कैसे रही। इसको तो बहुत पहले ही कट जाना था।" एक साहब की समझ में कुछ नहीं आया, उन्होंने यहां तक कह दिया — "मिर्जा साहब का अपनी पत्नी से झगड़ा हुआ था, गुस्से में कुछ समझ में नहीं आया तो चाकू से अपनी ही नाक काट डाली।"

उधर यह अफवाहें उड़ रही थीं, दूसरी तरफ मिर्जा ने अपने गाल पर रूई का बहुत बड़ा फाहा लगाया। फाहा इतना बड़ा था कि गाल के साथ नाक भी छुप गई। अब क्या था, आंखों देखा सबूत मौजूद था। अब तो सभी कहने लगे कि मिर्जा की नाक कट गई। जिधर देखो वही चर्चा। थोड़े दिनों के बाद जब फाहा हटाया गया तो नाक मौजूद थी। लेकिन लोग इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं थे। अब तो लोगों ने धड़ल्ले से मिर्जा को नवाब नकटे मिर्जा कहमा शुरू कर दिया।

अब मिर्जा की यह हालत है कि दुनिया से खफा हैं और जिंदगी से बेजार हैं। दांत पीस-पीस कर लोगों पर गुस्सा करते हैं। डर यह है कि गुस्से गुस्से में कहीं दुनिया ही न छोड़ दें।

डाका

मेरठ के पास डाकुओं ने एक बहुत बड़े बैंक पर डाका डाला। डाके में बहुत रुपया हाथ लगा। वह उस रुपये को लेकर एक होटल में जाकर ठहर गए। सोने से पहले एक ने दूसरे से कहा – "चलो गिनें, कितने रुपये हाथ लगे।" दूसरा डाकू बहुत थका हुआ था। अंगड़ाई लेते हुए बोला – "भाई, तंग न करो। थका हुआ हूं। इस समय गिना नहीं जाएगा। कल सुबह समाचारपत्रों से ही मालूम हो जाएगा कि हमने कितना रुपया लूटा।"

मोटे लाला

हमारे पड़ोस में एक लालाजी रहते हैं। वह बहुत मोटे हैं। सभी उन्हें देखकर हंसते हैं। एक दिन राजन ने उनसे उनकी इस सेहत का राज पूछ ही लिया। लालाजी क्या जवाब देते, बोले – "मैं कुछ सालों से रेलवे स्टेशन पर लगी मशीन पर अपना वजन तोलता हूं। इस मशीन से एक कार्ड भी निकलता है जो वजन बताता है। जब मैंने तुलना शुरू किया था, उस समय मेरा वजन 180 पौंड था लेकिन अब 210 पौंड हो गया है।" अभी यह बात अधूरी ही थी कि राजू ने हैरान होते हुए पूछा – "लालाजी! आपका इतनी जल्दी वजन कैसे बढ़ गया?" लाला ने अपनी टिकटों से भरी हुई जेबें दिखाते हुए कहा – "मेरे वजन में इन टिकटों का वजन भी शामिल है जो मेरी इन जेबों में भरी हुई हैं।"

स्वीमिंग (तैरना)

एक दिन अनिल अपने मम्मी, डैडी के साथ एक बहुत बड़े होटल में खाना खाने के लिए गया। खाना खाने से पहले सूप का आर्डर किया गया। जैसे ही सूप की प्लेटें आईं तो अनिल के डैडी ने देखा कि उनकी प्लेट में एक मक्खी पड़ी हुई है। यह देखते ही उन्होंने बैरे को बहुत डांटा और गुस्से से पूछा – "बताओ यह मक्खी मेरे सूप में क्या कर रही है?" बैरा क्या जवाब देता उससे गलती हो गई थी। उसने सूप देने से पहले प्लेटों को अच्छी तरह नहीं देखा था। इससे पहले कि बैरा कोई जवाब देता, अनिल बीच में बोल पड़ा – "डैडी! जाने भी दो, मक्खी तो सूप में स्वीमिंग कर रही है।"

नाम भगवान का

सुखबीर और सुरजीत बहुत अच्छे मित्र हैं। ये दोनों हमारे पास के मकानों में रहते हैं। एक दिन आपस में बात कर रहे थे। उस समय मैं भी वहाँ से गुजर रहा था। सुखबीर ने सुरजीत से पूछा – "तुम खाना खाने से पहले भगवान का नाम लेते हो?" सुरजीत का उत्तर था – "मैं भगवान का नाम क्यों लूं ? मेरी मम्मी तो बहुत ही अच्छा खाना बनाती है।"

शर्त

अरब देश के एक व्यापारी का ऊंट गुम हो गया। बहुत तलाश किया, मगर वह न मिला। तंग आकर अंत में उसने कसम खाई कि अगर ऊंट मिल गया तो उसे एक दीनार में बेच दूंगा। संयोग से कुछ दिनों बाद ऊंट मिल गया। बह बहुत घबराया। सौ दीनार का ऊंट एक दीनार में वह कैसे बेचे? अगर वह एक दीनार में नहीं बेचता तो कसम टूटती है और अगर बेचता तो घाटा पड़ता था। बहुत सोचने के बाद उसने ऊंट के गले में एक बिल्ली बांध दी और उसे बाजार ले गया। इसके बाद ऊंट पर एक तख्ती टांग दी, लिखा था – "यह ऊंट एक दीनार में बिकाऊ है। उसके गले में जो बिल्ली लटकी है, उसका दाम सौ दीनार है। मगर दोनों एक दूसरे से अलग-अलग नहीं बेचे जाएंगे।"

झगड़ा

एक छोटे कद के आदमी की पत्नी लंबे कद की थी। दोनों एक साथ चलते तो ऐसा नजर आता कि दस का अंक चला आ रहा है। एक दिन किसी बात पर दोनों में झगड़ा हो गया। मार-पीट हो गई। पत्नी जूता मारे तो पति के माथे तक पहुंचे। पति जूता मारे तो पत्नी की कमर तक ही पहुंचे। इस तरह पति को ज्यादा मार पड़ी। गुस्से-ही-गुस्से में वह सर पर पट्टी बांधे अपने साले के घर गया और बोला – "साले भाई, अपनी बहन को समझा लो वरना ऊंट पर चढ़कर इतने मुक्के मारूंगा कि उसका भेजा फट कर बाहर आ जाएगा।"

दलील-2

एक बार मुल्लाजी से उनका पड़ोसी गधा मांगने आया। मुल्लाजी गधा नहीं देना चाहते थे। उन्होंने बहाना कर दिया और यह कह दिया कि कोई दूसरा मांग कर ले गया है। इतने में दूसरी तरफ बंधे हुए गंधे ने हांक लगाई। हांक सुनते ही पड़ोसी ने कहा – "क्यों मुल्लाजी! दाढ़ी सफेद हो गई, झूठ बोलते शर्म नहीं आती। देखो! तुम्हारा गधा रेंक रहा है।" यह सुनते ही मुल्लाजी ने यह कहते हुए दरवाजा बंद कर दिया – "मैं उन लोगों से बातचीत नहीं करता जो इंसानों की जुबान की जगह जानवरों की जुबान पर विश्वास करते हैं।"

बिन्दी गोल

कक्षा में मास्टर जी ने बोर्ड पर एक बिंदी का निशान बनाया और उसके साथ ही एक का अंक और लगा दिया। अब यह दस की संख्या बन गई। अब इस दस को दो से भाग देना था। इससे पहले कि मास्टर जी भाग देते उन्होंने गलती से 10 की बिन्दी उड़ा दी। फिर हैरान होते हुए पूछा – "अरे यह बिन्दी कहां चली गई!" यह सुनते ही एक लड़का, जिसका नाम मोहन था, तुरंत ही बोला – "सर! डस्टर पर।"

गंजे भाई

रजनी अपने मम्मी-डैडी के साथ बाजार गई हुई थी। बरामदे में चलते हुए उसने एक कंघी बेचने वाले को, जो सिर से गंजा था, बोलते हुए सुना। वह कह रहा था — "मेरे मेहरबानो! मेरे पास तरह-तरह के कंघे हैं, लेकिन यह कंघा बहुत लचीला है, इसे आप मोड़कर दोहरा कर दो, टूटेगा नहीं। आप इसे हथौड़े से तोड़कर देखें तो टूटेगा नहीं।" रजनी यह सब सुनकर तुरंत ही बोल पड़ी — "अगर यह बात है तो आप इस कंघे से अपने बालों की कंघी करके दिखाओ?" यह सुनते ही गंजे भाई शरमा गए।

बूढ़ी चाची

जोन की बूढ़ी चाची को बच्चों से छेड़छाड़ करने की आदत थी। वह रोज कुछ ऐसी बात करती कि बच्चे मचल पड़ते थे। एक दो बार उसने जोन से भी छेड़छाड़ की। जोन चुप रहा। एक दिन बूढ़ी चाची ने छेड़ते हुए जोन से कहा — "मैं तुमसे प्यार नहीं करती, तुम मुझे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते।" यह सुनकर जोन बोला — "लेकिन आपको मुझसे प्यार करना होगा।" चाची यह सुनकर हैरान हुई और उसका कारण पूछा तो जोन का उत्तर था — "क्योंकि बाइबिल में यह लिखा हुआ है कि उनसे जरूर प्यार करो जो तुझसे घृणा करें।"

हाजिर जवाबी

किसी राजा के दरबार में एक मसखरा था। लोगों का मजाक उड़ाने में वह बहुत तेज था। वह कभी-कभी राजा का मजाक भी उड़ा देता था। एक दिन राजा ने भी मसखरे को बुद्धू बनाने की सोची। राजा ने मसखरे से छुपाकार एक-एक अंडा अपने दरबारियों में बांट दिया। जब मसखरा आया तो राजा ने उससे पूछा — "रात में सोते समय बहुत देर तक यह सोचता रहा कि क्या ही अच्छा होता अगर परमात्मा कपटी आदमी की कोई पहचान निश्चित कर देता। यह सोचते ही मुझे नींद आ गई। नींद में देखता हूं कि एक वयोवृद्ध मुझसे कह रहे हैं कि महल में जो पानी का हौज है उसमें दरबार का हर आदमी डुबकी लगाए। जो कपटी नहीं है उसको पानी में एक अंडा मिल जाएगा और जो कपटी है वो डुबकी लगाकर खाली हाथ बाहर निकलेगा। चलो आजमा कर देखें।" सब लोग राजा के साथ हौज तक आए, सबने बारी-बारी से डुबकी लगाई। जो डुबकी लगाता, अंडा हाथ में लिए पानी से बाहर निकलता और राजा के सामने रख देता। जब मसखरा पानी में डुबकी लगाकर बाहर निकला तो मुर्गे की तरह बांग देता हुआ हौज से बाहर निकला। राजा ने यह देखते ही पूछा — "यह क्या है?" मसखरा हंसा और बोला — "जब इतनी मुर्गियां अंडे देने वाली हों तो एक मुर्गा भी जरूर होना चाहिए।"

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार